Topic ID:- 6510157
Date: 18/04/2020

Important Topic

65th BPSC Mains/Written Examination-2020

TOPIC:

बिहार में 1857 का विद्रोह

From The Book BIHAR NAMAN PAPER-I

बिहार विद्रोहियों की कर्मभूमि रही है। इस भूमि ने जुल्म करने वाले कई शासकों को चुनौती दी। जब मुगल साम्राज्य अपने विस्तार की चरम अवस्था में थी तब बिहार के ही लाल 'शेरशाह सूरी' ने मुगलों को ललकारा और उसके मंसूबों पर पानी फेर दिया। जब अंग्रेज भारत में आए और बिहार (संयुक्त बिहार) को लेकर उन्होंने कूटनीति बनाई तो भला बिहार और बिहारी कैसे चुप बैठते?

बंगाल के अंतिम नवाब सिराजुदौला का जन्म पटना में हुआ और वह पटना में बहुत दिनों तक रहा। जब 23 जून 1757 में (प्लासी का युद्ध) अंग्रेजों के विरोध की बात आई तो सबसे पहले वही मैदान में अंग्रेजों से युद्ध करने गया किन्तु मीर जाफर और जगतसेठ की गद्धारी के कारण वह युद्ध हार गया। नवाब को पकड़ लिया गया और बड़ी ही निर्दयता से उसे मार दिया गया। मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया गया। प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल पर अंग्रेज कंपनी की वास्तविक सत्ता कायम हुई और नवाब उसकी कठपुतली बन गया।

अंग्रेजों ने 1760 ई. में बंगाल के नवाब मीर जाफर को नवाब के पद से हटा कर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल की नवाबी दे दी। वह अंग्रेजों के अंतहीन लालच और सत्ता में हस्तक्षेप से तंग आ गया था। उसने अंग्रेजों की चाल से बचने के लिए मुर्शिदाबाद को छोड़ अपनी राजधानी मुंगेर बना लिया जो वर्तमान में बिहार का एक स्वतंत्र जिला है। अंग्रेजों से उसकी ठन गयी और उससे बिहारियों की एक फौज बना कर 22 अक्टूबर 1764 ई. में पश्चिम बिहार के बक्सर नामक स्थान पर अंग्रेजों से युद्ध किया किन्तु पराजित हुआ जिसके बाद बंगाल पूरी तरह से अंग्रेजों के कब्जे में चला गया।

इसके बाद बिहार में, जो उस समय बंगाल का हिस्सा था, अंग्रेजों के खिलाफ कई सारे विद्रोह हुए। बिहार में इन विद्रोहों की शुरुआत बिहार के जमींदारों, हाकिमों, नवाबों, नौजवानों, जनजातिय लोगों, मौलवियों, सन्यासियों और खेतिहर लोगों द्वारा किया गया। जब-जब मौका मिलता ये लोग अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष और विद्रोह शुरु कर देते। कई बार तो ऐसे विद्रोह शोषक जमींदारों के खिलाफ भी हुआ जो अंग्रेजों के पिठ्ठु थे।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

बिहार के जनजातिय लोगों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित और असंगठित तौर पर कई विद्रोह और आंदोलन चलाए गए। इनमें कुछ प्रमुख है– सन्यासी विद्रोह, वहावी आंदोलन, नोनिया विद्रोह, लोटा विद्रोह, छोटा नागपुर का विद्रोह, तमाड विद्रोह, हो विद्रोह, कोल विद्रोह, भूमिज विद्रोह, चेर विद्रोह, संथाल विद्रोह, पहाड़िया विद्रोह, खरवार विद्रोह, सरदारी लड़ाई, मुण्डा विद्रोह, सफाडोह आंदोलन, ताना भगत आंदोलन तथा 1857 का विद्रोह।

बिहार में 1857 के विद्रोह की शुरुआत सबसे पहले 12 जून 1857 को देवघर जिले के रोहिणी नामक स्थान पर होती है। अमानत अली, सलामत अली और शेख हारो द्वारा अंग्रेज अधिकारी मेजर नार्मन तथा कुछ अंग्रेज सिपाहियों की हत्या कर दी जाती है और इस जुर्म के लिए उन्हें 16 जून 1857 ई. को आम के पेड़ पर लटकाकर फांसी दे दी जाती है और इस तरह से बिहार में 1857 की क्रांति की शुरुआत होती है।

23 जून 1857 को तिरहुत के वारिस अली को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके बाद समूचे तिरहुत इलाके में क्रांति की लहर फैल गई। 3 जुलाई 1857 को दो सौ से अधिक हथियारबंद क्रान्तिकारी पटना सिटी के एक पुस्तक विक्रेता पीर अली के नेतृत्व में देश को गुलामी की जंजीर से आजाद करवाने के लिए पटना में निकल पड़े (इन क्रांतिकारियों को हथियार मौलवी मेंहदी ने उपलब्ध करवाया था)। विद्रोहियों ने पटना सिटि के चौक पर अधिकार कर लिया। विद्रोह को दबाने के लिए बिहार के अफीम व्यापार के एजेन्ट मेजर लॉयल को भेजा गया लेकिन विद्रोहियों ने उसकी तथा उसके सैनिकों की हत्या कर दी। उस समय पटना के कमिश्नर टेलर थे जिन्होंने विद्रोह को दबाने के लिए अनेक कठोर कदम उठाए तथ पटना वासियों पर अनेक प्रतिबंध लगा दिया। टेलर ने इससे पूर्व 19 जून 1857 को ही पटना के तीन प्रतिष्ठित मुसलमानों मोहम्मद हुसैन, अहमदुल्ला और वायजुल हक को झांसा देकर गिरफ्तार कर लिया और उन पर वहाबियों से सहयोग लेने और सहयोग देने का आरोप लगाया। टेलर के आदेश पर पीर अली की दुकान और उसके घर को आग लगा दी गई।

6 जुलाई 1857 को तिरहुत के वारिस अली को बगावत के जुर्म में फाँसी पर लटका दिया गया। 7 जुलाई 1857 को पीर अली के साथ घसिटा, खलीफा, गुलाम अब्बास, नंदू लाल उर्फ सिपाही, जुम्मन, मदुवा, काजिल खान, रमजानी, पीर बख्श, वाहिद अली, गुलाम अली, महमूद अकबर और असरार अली को पटना के बीच सड़क पर फांसी पर लटका दिया गया। 13 जुलाई 1857 को पैगम्बर बख्श, डोमेन, तथा कल्लू खान तीनों को बगावत के जुर्म में फांसी दे दी गई। उत्तरी बिहार के मुजफ्फरपुर में 25 जुलाई 1857 को कुछ असंतुष्ट सैनिकों ने मेजर होम्स सहित अन्य अधिकारियों की हत्या कर दी। इसके बाद 30 जुलाई 1857 को समूचे सारण प्रमंडल (पटना, शाहाबाद, सारण, तिरहुत, चम्पारण) में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।

इस समय तक सम्पूर्ण बिहार में विद्रोह की लहर फैल गई थी। 25 जुलाई 1857 को ही दानापुर के तीन रेजीमेंटों के सैनिकों ने बगावत कर दी और वे शाहाबाद जिले में प्रवेश करके जगदीशपुर के असंतुष्ट जमींदार कुंवर सिंह से मिलकर विद्रोही बन गए। कुछ अन्य असंतुष्ट सैनिकों ने रोहतास, सहसराम के विद्रोही जमींदारों से सांठ–गांठ कर ली। बिहार के राजगीर, बिहारशरीफ एवं गया आदि जगहों पर भी छिटपुट विद्रोह प्रारंभ हो चुका था। इस बीच 30 जुलाई 1857 को सुरेन्द्र शाहदेव ने हजारीबाग के केन्द्रीय कारागार को तोड़कर क्रांतिकारियों को आजाद कर दिया। ये क्रांतिकारी भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए।

इन क्रांतिकारियों ने हजारीबाग, गया एवं उसके निकटवर्ती पंचायतों पर अपना कब्जा कर लिया। इसकी खबर सेना छावनी में पहुंचते ही डोरंडा एवं राँची के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और इन दोनों स्थानों को अपने कब्जे में ले लिया। डोरंडा के सैनिक विद्रोह का नेतृत्व जमादार माधव सिंह और सूबेदार नादिर अली खाँ ने किया था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बटुक गाँव के ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव एवं पाण्डेय

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
By Santosh Kashyap
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

गणपत राय का योगदान अतुलनीय है। इन्होंने मुक्तवाहिनी के माध्यम से अनेक शूरवीरों को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया जिसमें जयमंगल पाण्डे, वृजभूषण सिंह, भाई घासी सिंह, खटंगा के टिकैत उमशंव सिंह उल्लेखनीय है। 10 सितम्बर 1857 को जगदीशपुर में बाबू कुँवर सिंह और 2 अक्टूबर 1857 को चतरा में विद्रोहियो को अंग्रेजों ने पराजित किया।

3 सितम्बर 1857 को चाईबासा स्थित रामगढ़ बटालियन के सिपाहियों ने भी विद्रोह कर दिया। इन्होंने सरकारी खजाने को लूट लिया तथा जेल के कैदियों को मुक्त करवा दिया। इन विद्रोहियों ने राँची एवं हजारीबाग में अंग्रेजों के नाक में दम कर दिया। इन विद्रोहियों की सहायता पोडाहार के राजा अर्जुन सिंह ने की। यहाँ की स्थानीय हो जनजातियों ने भी राजा एवं विद्रोहियों की मदद की।

पलामू में यह आंदोलन देर से अवश्य शुरु हुआ किन्तु आन्दोलन अंग्रेजों के लिए परेशानी का कारण बन गया। यहाँ नीलाम्बर एवं पीताम्बर ने भोगता खेरवार तथा चेरों को एकमत कर मजबूत सैनिक दस्ता का गठन किया। इन दोनों भाइयों के नेतृत्व में इन दस्तों ने चैनपुर स्टेट एवं रंका स्टेट पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में उनको दो भाईयों भोजा जग सॉय एवं दलेल सॉय ने काफी मदद की। इसके बाद इन विद्रोहियों ने 29 नवम्बर 1857 को राजहंस स्थित कोल कम्पनी तथा अंग्रेजों एवं अधिकारियों के बंगलों को तहस-नहस कर दिया। अन्तत: पीताम्बर एवं नीलाम्बर पकड़े गए एवं दोनों भाइयों को एक पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई। भड़के हुए विद्रोहियों को दबाने तथा विद्रोह को शांत करने के लिए 16 जनवरी 1858 को कैप्टन डाल्टन स्वयं सेना के साथ पलामू पहुँचे। उनके साथ लेफ्टिनेंट ग्राहम भी था। दोनों ने पलामू के किले पर आक्रमण किया एवं विद्रोहियों को तितर-बितर कर दिया।

बिहार में कुंवर सिंह की मृत्यु तथा झारखण्ड में पलामू में विद्रोहियों के साथ ही 1857 की महान क्रांति धीरे-धीरे शिथिल पड़ने लगा और अंतत: समाप्त हो गया।

1857 की क्रांति और भारतीय इतिहासकार

विभिन्न इतिहासकारों ने 1857 की क्रांति के स्वरूप को लेकर अलग-अलग विचार प्रस्तुत किया हैं। कुछ इतिहासकार इसे केवल एक *'सैनिक विद्रोह'* तो कुछ इसे *'ईसाईयों के विरुद्ध हिंदू-मुस्लिम का षड्यंत्र'* मानते हैं। इस क्रांति के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत निम्न हैं-

1. सर जॉन लारेन्स एवं सीले- '1857 का विद्रोह सिपाही विद्रोह मात्र था।'

2. आ. सी. मजूमदार- 'यह न तो प्रथम था, न ही राष्ट्रीय था और यह स्वतंत्रता के लिए संग्राम भी नहीं था।'

3. वीर सावरकर- 'यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सुनियोजित युद्ध था।'

4. जेम्स आउट्रम एवं डब्ल्यू टेलर- 'यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू एवं मुसलमानों का षड्यंत्र था।'

5. एल.आर. रीज - 'यह धर्मान्धों का ईसाईयों के विरुद्ध षड्यंत्र था।'

6. विपिनचंद्र - '1857 का विद्रोह विदेशी' शासन से राष्ट्र को मुक्त कराने का देशभक्तिपूर्ण प्रयास था।'

भारत के 1857 के महासागर के संदर्भ में जितनी भी भ्राँतियाँ 1960 के दशक में अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीय बुद्धिजीवियों ने फैलाई उतनी किसी भी देश के विद्वानों ने सम्भवत: न फैलाई हो। ब्रिटिश प्रशासकों, सैनिक अधिकारियों, ईसाई मिशनरियों तथा नगण्य ब्रिटिश इतिहासकारों के ग्रंथों से अपेक्षा करना कि वो अपने

From The Book BIHAR NAMAN PAPER-I
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

अधीन देश के बारे में तथ्यात्मक विवेचना करेंगे, सर्वथा अनुचित एवं मूर्खतापूर्ण होगी। परंतु कुछ चोटी के भारतीय इतिहासकारों द्वारा उसकी भ्रांतिपूर्ण व्याख्या, विरोधाभासपूर्ण तथा असत्य कथन, नवीनतम तथ्यों की उपेक्षा तथा कुछ प्रसंगों पर ''मैं न मानूँगा'' की हठ अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। इस प्रसंग में दिग्गज इतिहासकारों डॉ. आर. सी. मजूमदार तथा डॉ. एस. एन. सेन से संबंधित ग्रंथों पर विचार करना उपयुक्त होगा।

यह सर्वविदित है कि डॉ. एस. एन. सेन की पुस्तक *'अठारह सौ सत्तावन (1857)'* तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा प्रायोजित थी तथा इसका प्रकाशन भी भारत सरकार ने किया था। तत्कालीन भारत का राजनीतिक एवं बौद्धिक वायुमंडल महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू तथा अबुल कलाम आजाद की चिंताधारा के अनुकूल था। वस्तुतः क्रांतिकारियों तथा उनके इतिहास को 1947 ई० में ही राजनीति के गलियारों से धक्का देकर निकालने का प्रयत्न हुआ। सुभाष चन्द्र बोस तथा आजाद हिन्द फौज को सरकारी दस्तावेजों से निकाल दिया गया। क्रांतिकारी वीर सावरकर को महात्मा गाँधी की हत्या का आरोपी तथा देश विभाजन के दोषी के रूप में प्रचारित किया गया। इस संबंध में वामपंथी लेखक कांग्रेस के भोंपू बन गए। कुछ अहिंसक कांग्रेसी राजभक्त 1857 के कैलेंडर को ही नक्शे से हटाना चाहते थे तथा उन्होंने इस वर्ष का नाम 1856 ई० रखने का सुझाव भी दिया था। डॉ. आर. सी. मजूमदार की दृष्टि भी काल और परिस्थिति से प्रभावित दिखती है न कि तथ्यों तथा प्रमाणों पर आधारित। उनके ग्रंथ में अनेक स्थानों पर आक्षेप अधिक हैं स्पष्टीकरण कम। अगर 1857 का आंदोलन सफल ही होता तो बौद्धिक पुनर्जीवन का मार्ग अवरुद्ध हो जाता। क्या वे यह कहना चाहते हैं कि अंग्रेजों से पूर्व भारत में ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा की कमी थी। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ के दो दशकों के आंकड़े जो ब्रिटिश प्रशासकों ने तथा बाद में धर्मपाल जैसे विद्वानों ने दिये, मजूमदार के कथन को पूर्णतः असत्य सिद्ध करते हैं। उनका विचार है कि ''1857 में जनता की सहानुभूति न थी।''

प्रसिद्ध विद्वान *वहाडपांडे* ने इसका विस्तृत विश्लेषण किया है कि यह संघर्ष भारतवर्ष में सर्वव्यापी था तथा भारत के प्रत्येक समुदाय, वर्ग तथा सम्प्रदाय ने इसमें भाग लिया था। क्या ब्रिटिश भारत की 20 करोड़ जनसंख्या में 3.5 लाख लोगों का बलिदान (मजूमदार ने यह संख्या 2.5 लाख मानी है) इसके सर्वस्पर्शी रूप को स्पष्ट नहीं करता? भीषण नरसंहार, स्थान-स्थान पर नागरिकों को फांसी, देश निर्वासन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है? क्या इस संघर्ष में सैकड़ों वनवासियों, दलितों, महिलाओं को फांसी नहीं हुई?

मजूमदार मानते हैं कि 1857 का संघर्ष जनता का नहीं बल्कि ''रजवाड़ों तथा सैनिकों'' का संघर्ष था। यदि पेशवा की पेन्शन बन्द न होती तथा रानी को दत्तक पुत्र लेने की सुविधा होती तो वे क्रांति में भाग न लेते।'' यह कितना थोथा और तथ्यहीन तर्क है। जे. डब्ल्यू. कमी, जिसे मजूमदार ने विद्रोह का सबसे बड़ा इतिहासकार माना है, नाना साहेब को 1857 का सबसे बड़ा षड्यंतत्रकारी मानते हैं। यह बात तत्कालीन इतिहासकार *मालेसनब* भी मानते हैं। नाना साहेब के अनेक पत्र, उनके जीवन पर हुए सरकार की ओर से अनुसंधान, इस पर प्रकाश डालते हैं। प्रसिद्ध लेखक आनंद कुमार मिर ने लिखा है कि क्रांति से पूर्व नाना साहेब के इंग्लैंड के बैंक में 5 लाख पौंड जमा थे जो क्रांति के प्रारंभ के समय केवल तीन हजार पौण्ड रह गये थे। मजमूदार इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं देते कि यह धन कहाँ खर्च हुआ? पत्रों से ज्ञात होता है कि नाना साहेब की तैयारी 1854 ई० से ही चल रही थी। यही बात रानी झांसी के बारे में भी है।

यह भी कहना कि यह संघर्ष सुनियोजित नहीं था, तथ्यों पर आधारित नहीं है। यदि क्रांति सुनियोजित न होती तो देश के दस लाख वर्गमील में न फैलती और न ही देश की 4 करोड़ जनता इससे प्रभावित होती, न हजारों गाँव नष्ट होते, और न लाखों शहीद होते।

By Santosh Kashyap
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

मजूमदार का मत है कि ये क्रांति न थी क्योंकि राष्ट्रीयता की भावना ही तब तक उत्पन्न नहीं हुई थी। उनके अनुसार 'राष्ट्रीयता का तत्व भ्रूणावस्था में था।' यद्यपि यह सही है कि पाश्चात्य ढंग की राष्ट्रीयता न थी परंतु सम्पूर्ण देश में देशभक्ति की प्रखर भावना थी, जो स्वधर्म तथा स्वदेश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध थी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारत की एकात्मकता का भाव तो पहले से ही भारतीयों में व्याप्त था। हण्टर का यह विचार ही था कि हमने भारत को राजनीतिक तरीके से जीत लिया है परन्तु सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से लड़ाई बाकी है।

डॉ० एस० एन० सेन के अनेक तर्क तो मजूमदार की तर्ज पर है- जैसे क्रांति सुनियोजित न थी, न ही कुशल नेतृत्व था और न ही इसे राष्ट्रीय कहा जा सकता है। परन्तु उन्होंने अधिकतर ऊर्जा इस बात में लगा दी कि रानी झांसी द्वारा जगन्नाथपुरी के राज पुरोहित को लिखा पत्र जाली था। उनके अनुसार दक्षिण भारत राजभक्त बना रहा जिसे डॉ० डी० डिवेकर ने बिल्कुल झूठा सिद्ध कर दिया है।

अत: संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 1857 के इस महासागर का अभी भी सही मूल्यांकन नहीं हुआ है। देश के बड़े-बड़े इतिहासकारों ने भी इसे गंभीरता से नहीं लिखा है। आवश्यकता है कि देश में स्थानीय स्तर पर भी इसके चिह्न ढूँढे जाएं। इसके लिए एक राष्ट्रीय रजिस्टर बनाया जाए ताकि इसका सही मूल्यांकन हो तथा देश की नवयुवक पीढ़ी इससे प्रेरणा प्राप्त कर सके।

We are providing-
- **free** ONLINE Test Series For 66th BPSC Preliminary Examination-2020
- Regular Standard Study Material for BPSC/BPSSC/BSSC

You can join us:
What's app No.- 9355167891 Facebook:- BIHAR NAMAN
Telegram Link:- http:t.me/biharnaman
Email Id:- biharnaman@gmail.com

From The Book
BIHAR NAMAN PAPER-I

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
NEW DELHI- 110084
(Approved By: Govt. Of India)
Mob:- 8368040065
Email- biharnaman@gmail.com

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE